



श्रीगणेशाय नमः॥ अथ चतुःषष्टियोगिनीपञ्चांगतन्त्रदेवताग्निरक्तवस्त्राः षोडश्वारो  
 षण्णकापंक्तिः स्वमण्डो बस्त्राः षण्णकापंक्तिः कृत्वा वीक्ष्य मारानामभिराधास्य संपूज्य  
 पापसर्वनी नृदयात् शुक्लवर्तः शूलधरोऽमरु पाशां सिधुरे सर्वा जंकार भूषितस्य से  
 ने १ जपे २ सहागच्छ ३ गच्छे मां पापसर्वजिं गृह्णाता ४ ममैक्षितं कुरु स्वाहा ५ वं विजये ३  
 जपति श्रपराजिते ५ महायोगिनी ६ अष्टसिद्धियोगिनी ७ गणेश्वरी ८ ततः गौरवस्ते  
 शमा ९ ओं ऊं पुस्तकवीणां प्रेतासनि १० ह्येतां त्वादि प्राज्वते ११ वंद्य किं नी २ काजी ३ का  
 लशत्री ४ निशाचरी ५ टकारिणी ६ बुद्धवेतासि ७ हंकारि ८ ततः रक्तवस्ते ग्याजा ९  
 शक्तमभयवर ६ उर्द्ध्वकेशि १० एते मेघत्रयः हरितवर्णवर्षा आरुति योसठि यो



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वतुः सखि योगिनी पूजा तत्रैव तान्तरिकवत्तः दो अक्षोपका  
 ॥ १ ॥ एवम् मध्ये अत्र पंक्तिः कृत्वा वीर्यमाणा नामभिरावा सत्तैः पूज्यपुष्प  
 वस्त्री नदध्याते शुक्ल वस्त्रे ध्यात्वा मन्त्रा शोषिधुरे सर्वात्मकारभूवित्तैः सैः  
 १ जपे २ रत्नागच्छ गच्छे मां पापसर्वविहराणां २ मन्त्रे स्थित २ स्वाहा एवं विजये ३  
 जपति अपराजिते ४ महायोगिनी ५ अष्टसिद्धिको गिनी ७ गणेश्वरी तः गोर  
 वस्त्रे क्षमा लां ध्यात्वा पुस्तकं ध्यात्वा धारि प्रेतासनि एते हीत्यादि प्राप्यतु एवं ध्यात्वा  
 श्री लीलां ध्यात्वा श्री ४ निशाचरी ५ हंकारिणि ६ उदयेनाधि ७ हंकारिणि ८ ततः  
 रक्तवस्त्रे ग्वाणा शक्त्यै मन्त्रवरद ५ हंकारिणि १ २ सैः ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०  
 पी अर इति चोसखि योगिनी चक्रम्

मैत्रयुक्तं नमः एतत्तन्मया

ह	ह	स्व	स्वा	पी	स्वा	ह	स्वा	ह
पी	पी	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
पी	पी	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह

मैत्रयुक्तं नमः एतत्तन्मया